

उत्तर—(c) संचार—माध्यम

गद्यांश 8

‘आदमी की तलाश’ यह स्वर अकसर सुनने को मिलता है। यह भी सुनने को मिलता है कि आज आदमी, आदमी नहीं रहा। इन्हीं स्थितियों के बीच दार्शनिक राधाकृष्णन की इन पंक्तियों का स्मरण हो आया, “हमने पक्षियों की तरह उड़ना और मछलियों की तरह तैरना तो सीख लिया है, पर मनुष्य की तरह पृथ्वी पर चलना और जीना नहीं सीखा।” जिन्दगी के सफर में नैतिक और मानवीय उद्देश्यों के प्रति मन में अटूट विश्वास होना जरूरी है। कहा जाता है—आदमी नहीं चलता, उसका विश्वास चलता है। आत्मविश्वास सभी गुणों को एक जगह बाँध देता है, यानी कि विश्वास की रोशनी में मनुष्य का सम्पूर्ण व्यक्तित्व और आदर्श उजागर होता है। गेटे की प्रसिद्ध उक्ति है कि जब कोई आदमी ठीक काम करता है तो उसे पता तब नहीं चलता कि वह क्या कर रहा है पर गलत काम करते समय उसे हर क्षण यह ख्याल रहता है कि वह जो कर रहा है, वह गलत है। गलत को गलत मानते हुए भी इंसान गलत किए जा रहा है। इसी कारण समस्याओं एवं अंधेरों के अंबार लगे हैं। लेकिन ऐसा नहीं है। कुछ अच्छे लोग भी हैं, शायद उनकी अच्छाइयों के कारण ही जीवन बचा हुआ है। ऐसे लोगों ने नैतिकता और सच्चरित्रता का खिताब ओढ़ा नहीं, उसे जीकर दिखाया। वे भाग्य और नियति के हाथों खिलौना बनकर नहीं बैठे, स्वयं के पसीने से अपना भाग्य लिखा। महात्मा गाँधी ने इसलिए कहा कि हमें वह परिवर्तन खुद बनना चाहिए, जिसे हम संसार में देखना चाहते हैं। जरूरत है कि हम दर्पण जैसा जीवन जीना सीखें। उन सभी खिड़कियों को बन्द कर दें जिनसे आने वाली गन्दी हवा इंसान को इंसान नहीं रहने देती। मनुष्य के व्यवहार में मनुष्यता को देखा जा सके यही ‘आदमी की तलाश’ है।

1. ‘मन में अटूट विश्वास होना जरूरी है।’ उपयुक्त वाक्य में ‘अटूट’ शब्द व्याकरण की दृष्टि से है :

- (a) विशेषण (b) क्रिया—विशेषण
(c) संज्ञा (d) सर्वनाम

उत्तर—(a) विशेषण

2. मुख्य भाव के अनुसार गद्यांश का सबसे उपयुक्त शीर्षक हो सकता है :

- (a) जीवन यात्रा (b) आदमी की तलाश
(c) मानवीय उद्देश्य (d) सच्ची मानवता

उत्तर—(b) आदमी की तलाश

3. सभी गुणों को एक स्थान पर जोड़ने की शक्ति किसमें बताई गई है ?

- (a) सच्चरित्रता में (b) आत्मविश्वास में
(c) मनुष्य में (d) नैतिकता में

उत्तर—(b) आत्मविश्वास में

4. कौन-सा शब्द लिंग की दृष्टि से शेष से भिन्न है :

- (a) मछली (b) पृथ्वी
(c) पक्षी (d) नदी

उत्तर—(c) पक्षी

5. ‘आदमी आदमी नहीं रहा’ कथन का भाव है :

- (a) मानव प्रगतिशील हो गया (b) मनुष्य में मनुष्यता नहीं रही
(c) आदमी देवता बन गया (d) मनुष्य राक्षस जैसा बन गया

उत्तर—(b) मनुष्य में मनुष्यता नहीं रही

6. अनुचित कार्य करते समय मनुष्य को :

- (a) विश्वास रहता है कि किसी को पता नहीं चलेगा।
(b) अच्छे मार्ग से कुछ पाने का भरोसा नहीं होता।
(c) पता ही नहीं होता है कि वह अनुचित कर रहा है।
(d) मालूम रहता है कि ठीक नहीं कर रहा।

उत्तर—(d) मालूम रहता है कि वह ठीक नहीं कर रहा।

7. ‘अंधेरों के अंबार लगे हैं’ रेखांकित का भाव है :

- (a) विघ्न—बाधाओं के (b) दुर्भाग्य के
(c) अन्धकार के (d) बुराइयों के

उत्तर—(d) बुराइयों के

अपठित काव्यांश—1

निम्नलिखित काव्यांशों को ध्यानपूर्वक पढ़िए और पूछे गए प्रश्नों के सही विकल्प चुनकर उत्तर दीजिए।

खेत और खलिहान तुम्हारे,

ये पहाड़, जंगल, उपवन,

यह नदियाँ, ये ताल सरोवर,

गाते हैं विप्लव गायन!

उत्तर में गा रहा हिमाचल,

दक्षिण में वह सिन्धु गहन

सभी गा रहे हैं, लो आया!

यह लोलित जागरण प्रहर!

गंगा गाती कल—कल ध्वनि में,

भारत के कल की बातें,

यमुना गाती है कल—कल कर

बीत गई कल की रातें,

साबरमती गरज कर बोली

अब कैसी निशि की छातें

दिन आया, अपना दिन आया

यों गाती है लहर—लहर!

उत्तर से दक्खिन पूरब से

पश्चिम तक तुम एक, अरे!

भेदभाव से परे एक ही

रही तुम्हारी टेक अरे!

एक देश, एक प्राण तुम,

तुम हो नहीं अनेक अरे!

खोलो निज लोचन, देखो यह

खिली एकता ज्योति प्रखर!

1. सम्पूर्ण प्रकृति गा रही है—

- (a) प्रेम के गीत (b) विनाश के गान
(c) जागृति के गीत (d) क्रांति के गीत

उत्तर—(c) जागृति के गीत

2. गंगा, यमुना और साबरमती नदियाँ कल-कल ध्वनि में संदेश देती हैं कि—

- (a) वर्तमान एवं भविष्य की चिंता करो।
(b) अतीत के गौरव को मल भूलो।
(c) अतीत और भविष्य दोनों ही वर्तमान से दूर हैं।
(d) भावी पीढ़ी के लिए कार्य करो।

उत्तर—(a) वर्तमान एवं भविष्य की चिंता करो।

3. 'एकता की ज्योति प्रखर' का आशय है—

- (a) एकता की ज्योति तेज का प्रखर है।
(b) एकता का प्रकाश बहुत शक्तिशाली है।
(c) एकता की ताकत को जानो।
(d) भेदभावों को भूल एकता को महसूस करो।

उत्तर—(d) भेदभावों को भूल एकता को महसूस करो।

4. एक काव्यांश का संदेश है—

- (a) देशवासियों देश की एकता को मजबूत करो।
(b) भेद होते हुए भी पूरा भारत एक है।
(c) शरीर में अंग और प्राणों में जीवन है।
(d) आँखें खोलकर देश की अभिन्नता को पहचानो।

उत्तर—(b) भेद होते हुए भी पूरा भारत एक है।

5. "गंगा गाती कल-कल ध्वनि में" में अलंकार है—

- (a) यमक (b) रूपक
(c) अनुप्रास (d) उपमा

उत्तर—(c) अनुप्रास

अपठित काव्यांश-2

निजता की संकीर्ण क्षुद्रता
तेरे सुविपुल में सो जाय।
ओ दुस्सह तेरी दुस्सहता
सहज सह्य हमको हो जाय।
ओ कृतान्त हमको भी दे जा
निज कृतान्तता का कुछ अंश,
नई सृष्टि के नवोल्लास में,
फूट पड़े तेरा विभ्रंश!

नव भूखंड अमृत के घट-सा
दे ऊपर की ओर उछाल
सागर का अन्तस्तल मथ कर
तेरे विप्लव का भूचाल।

जीर्ण शीर्णता के दुर्गों को
कुसंस्कार के स्तूपों को
ढा दे एक साथ ही उठकर
दुर्जय तेरा क्रोध कराल।

कुछ भी मूल्य नहीं जीवन का
हो यदि उधर पास न ध्वंस;
ओ कृतान्त हमको भी दे जा
निज कृतान्तता का कुछ अंश।
ओ भैरव, कवि की वाणी का
मृदु माधुर्य लजा दे आज,
वंशी के ओठों पर अपना,
निर्मम शंख बजा दे आज।

1. 'संकीर्ण क्षुद्रता' में सम्मिलित होते हैं—

- (a) स्वार्थपूर्ण समाज के बुरे रीति-रिवाज।
(b) पतले-दुबले नाटे कद के लोग।
(c) छोटे शहरों की सँकरी गलियाँ।
(d) समाज में फैले नीच प्रकृति के लोग।

उत्तर—(a) स्वार्थपूर्ण समाज के बुरे रीति-रिवाज

2. 'नव भूखंड अमृत के घट-सा, दे ऊपर की ओर उछाल' का आशय है—

- (a) धरती के नये टुकड़े को ऊपर ऐसे उछालो जैसे अमृत का घड़ा हो।
(b) जमीन के छोटे-छोटे नौ टुकड़ों को चारों ओर बिखेर दो।
(c) धरती को ऐसा नया बनाओ जैसे अमृत का घट।
(d) अपने नवीन उत्साह व आत्मविश्वास से लोगों को नया जीवन दो।

उत्तर—(d) अपने नवीन उत्साह व आत्मविश्वास से लोगों को नया जीवन दो।

3. क्रोध ऐसा हो—

- (a) इतना भयंकर कि उसे जीतना कठिन हो।
(b) इतना अधिक जिसे जीतकर शांत किया जा सके।
(c) क्रोध इतना अधिक हो कि चेहरा काला हो जाए।
(d) क्रोध और जीत दोनों का साथ सरल नहीं है।

उत्तर—(a) इतना भयंकर कि उसे जीतना कठिन हो।

4. जीवन मूल्यवान उसका होता है, जिसने—

- (a) क्रान्तिकारी परिवर्तन किए हों। (b) कोई कष्ट सहन न किए हों
(c) कोई नया कार्य किया हो। (d) बहुत सुख झेला हो।

उत्तर—(a) क्रान्तिकारी परिवर्तन किए हों।

5. 'कुसंस्कार' का विलोम है—

- (a) संस्कार (b) परिष्कार
(c) आविष्कार (d) सुसंस्कार

उत्तर—(d) सुसंस्कार